XII/5(S)

पुरुषोत्तमदास टंडन,
मंत्री,
साहित्य भवन लि०

रानीमंडी,
इलाहाबाद
१८-२-१९४६

प्रिय पद्म कान्त जी,

मुझे खेद है कि कल शाम मे, घरेलू लड़कपन के कारण, रुपया आप तक न पहुंच सका। इसका खेद मुझे कितना था यह हम स्वयं जानते हैं। शायद आप अनुमान न भी लगा सके हों। प्रायश्चित स्वरूप आदमी द्वारा २५०) भेज रहा हूं।

मैंने दीवान जी से कह दिया है कि प्रथम भाग की ५० तथा दूसरे भाग की ५० प्रतियां ~~है~~ आप ले लें। जैसी आपसे पहले बात हुई थी ५०% पर एजेंसियां आदि द्वारा पुस्तक शीघ्र समाप्त करने की कोशिश हो जायगी और उसका परिणाम भी ठीक थोड़े समय में बता दें आप जी।

आशा है आप हमारी भूल के लिए क्षमा प्रदान करेंगे।

भवदीय
[illegible]

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत
National Archives of India